राधे राधे श्री हरिवंश 2

हिंडोरे झूलत तन सुकुमार ।
पुलकि पुलकि राधे उर लागत, प्रीतम प्रान आधार ॥ [1]

भाइ बसन सजे मनसिज के, उर वर हार सुढार ।
सुख में झूलति कुँवरि लाड़िली, रमकत स्याम उदार ॥ [2]

जुगल सरूप अनूप विराजत, मनमथ भेद अपार ।
श्रीरसिक बिहारी की छवि निरखत, खरे कुंज के द्वार ॥ [3]

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/32942/title/radhe-radhe-shri-harivansh-2

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |